सांस्कृतिक हस्तक्षेप के आयाम

असग़र वजाहत

सांस्कृतिक हस्तक्षेप के आयाम

असग़र वजाहत

अनुक्रम

जीवन की तक़लीफ़ें और सांस्कृतिक हस्तक्षेप	4
सांस्कृतिक पतन के पचास साल	11
सांस्कृतिक हस्तक्षेप के आयाम	16
छोटे शहरों में नई संस्कृति	23
भयमुक्त चेहरों का आकर्षण	29
नाली से ख़ून बहेगा या गंदा पानी ?	35
ताकि बाक़ी रहे देश में नमक	40
दिल्ली में हिंदी	47
हिंदी लिपि : ये दिल मांगे मोर	52
हिंदी क्षेत्र में हस्तक्षेप कैसे?	66
हिंदी क्षेत्र में सांस्कृतिक पहल की ज़रूरत	75
हिंदी-उर्दू संबंध : कल, आज और कल	79
हिंदी और टेलीविज़न	81
इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बनाम 'आंखों देखी'	88
साहित्य और सिनेमा : रूपांतरण के आयाम	94
ईरान में हिंदी सिनेमा का जुनून	105

आज का सिनेमा और आगे का सिनेमा 109

फ़िल्म लेखन : युवाओं के हाथ में झंडा होगा 116

हमारी ख़ता? 120

छब्बीस जनवरी : मनाए तो कौन मनाए? 124

जीवन की तक़लीफ़ें और सांस्कृतिक हस्तक्षेप

हम लोगों के बीच यह कहना एक फ़ैशन-सा हो गया है कि साहित्य और कलाओं से समाज नहीं बदलता, क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं होते। पंजाबी की एक प्रख्यात लेखिका ने कुछ समय पूर्व अपने साक्षात्कार में कहा है कि मुझे यह ग़लतफ़हमी नहीं है कि मेरे लेखन से समाज बदल जाएगा। वैसे साहित्य और संस्कृति का अवमूल्यन कर उसे पीछे हटाने या उसका महत्त्व और जीवन में उसकी सार्थक भूमिका को नकारने के प्रयास समाजवादी यथार्थवाद की अवधारणा के बाद ही शुरू हो गए थे, लेकिन आज भूमंडलीकरण और मुक्त बाज़ार की ताक़तें अपना सबसे बड़ा दुश्मन साहित्य और संस्कृति को मानती हैं और यही कारण है कि आज फिर डंके की चोट पर यह कहा जा रहा है कि साहित्य और संस्कृति से समाज नहीं बदलता। यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि नव-साम्राज्यवाद को आज पुरानी संस्कृतियों से चुनौती मिल रही है। यूरोप, विशेष रूप से मध्य और पूर्वी यूरोप भूमंडलीकरण और मुक्त बाज़ार के सामने धराशायी हो गए हैं लेकिन भारत, चीन और एशिया की अन्य प्राचीन सभ्यता टिकी हुई है। मैं यहां उदाहरण देना चाहूंगा, पता नहीं यह कितना प्रासंगिक और अर्थपूर्ण होगा लेकिन रोचक ज़रूर लगेगा। दिल्ली के अत्याधुनिक बाज़ार में आमने-सामने 'नाथू स्वीट्स' और 'कंटकी फ़्राइड चिकन' रेस्टोरेंट खुले। जो लोग दिल्ली से थोड़ा-बहुत परिचित हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि 'नाथू स्वीट्स' भारतीय हलवाई की दुकान का अत्यधिक परिष्कृत और आधुनिक रूप है जहां तरह-तरह के शाकाहारी भारतीय व्यंजन और मिठाइयां मिलती हैं। 'कंटकी फ़्राइड चिकन' के बारे में हम सब जानते हैं कि यह

मांसाहारी खाने की एक अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला है जो पूरे संसार में फैली हुई है। आमने-सामने खुले इन दो रेस्टोरेंटों को देखकर पता नहीं क्यों मन में यह इच्छा पैदा होती थी कि देखें इनमें से कौन सा रेस्टोरेंट बंद होता है। दोनों के बीच प्रतिद्वंद्विता तो थी ही। मन में यह भी आता था कि काश कंटकी फ़्राइड चिकन रेस्टोरेंट बंद हो जाए और यह प्रमाणित किया जा सके कि भारतीय लोगों ने भारतीय खाने की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय खाने को अस्वीकार कर दिया। एकाध साल के अंदर-अंदर कंटकी बंद हो गया। यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि आप अगर मध्य यूरोप के देश हंगरी की राजधानी बुदापैश्त के प्रमुख बाज़ार वात्सी उत्सा चले जाएं तो आपको शायद ही कोई हंगेरियन खाने का रेस्टोरेंट मिले क्योंकि रेस्टोरेंट की बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने पुराने हंगेरियन रेस्टोरेंट ख़रीदकर मैकडोनाल्ड, के. एफ़. सी., पीज़ा हट, टी. जे. फ़्राइड आदि-आदि खोल दिए हैं।

लंबी कहानी सुनाकर मैं सूत्र वाक्य पर आना चाहूंगा।

आज हमारे जीवन की तक़लीफ़ों में भूमंडलीकरण और मुक्त बाज़ार द्वारा पैदा की गई तक़लीफ़ें बहुत प्रमुख हैं जिन्हें हम सांस्कृतिक हस्तक्षेप से साध सकते हैं। ऐसा नहीं है कि यह करके हम कुछ नया करने का गौरव प्राप्त कर लेंगे। स्वतंत्रता का इतिहास इसका साक्षी है कि साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ हमारी लड़ाई का आधार सांस्कृतिक हस्तक्षेप ही था। विदेशी कपड़ों को जलाए जाने का आंदोलन हो या सुधारवादी आंदोलन, सभी भारतीय समाज और संस्कृति से जन्मे थे और वही स्थापित थे। हमारे देश में ही नहीं, दुनिया में साहित्य और संस्कृति ने सार्थक हस्तक्षेप किए और समाज को दिशा दी, परिवर्तन की ओर मोड़ा। मैं यहां केवल फ़ारसी महाकवि फ़िरदौसी आदि की